October 28, 2025

Celebration of 31st University Foundation Day by Internal Quality Assurance Cell of the University, Guru Jambheshwar University of Science and Technology, Hisar, Prof. T.G. Sitharam, Chairman, All India Council for Technical Education joined as Chief Guest.

Prof. T.G. Sitharam, Chairman, All India Council for Technical Education (AICTE) said that Guru Jambheshwar University of Science and Technology, Hisar (GJUS&T) will play a key role in fulfilling the resolution of making India a Viksit Bharat by the year 2047. Established in the name of the great saint and environmentalist Guru Jambheshwar Ji Maharaj, this University is contributing to research and innovation as well as the establishment of moral values. Prof. T.G. Sitharam was addressing the ceremony organized on Tuesday to mark the 31st Foundation Day of GJUS&T as the chief guest. The ceremony was presided over by Prof. Narsi Ram Bishnoi, Vice-Chancellor of the University. Prof. K.C. Bansal, Former Director of NBPGR-ICAR, New Delhi, and Kamal Jeet Singh, Director of AICTE were present as guests of honour. Dr. Vandana Bishnoi, the first lady of the University, Dr. Vijay Kumar, Registrar, Prof. Yogesh Chaba, Dean Academic Affairs and Prof. Kashmiri Lal, Director IQAC were also present at the ceremony.

In his address, Prof. T.G. Sitharam said that Artificial Intelligence has completely transformed the current landscape. While artificial intelligence has many benefits for us, it has also brought many challenges. In such a situation, the role of teachers increases further. It is necessary for us to further skill ourselves according to the current circumstances and contribute to the development of the nation and society. He said that India is developing rapidly. In the field of research and technology, we have moved from being importers to exporters. He described the National Policy 2020 as a revolutionary step and called for greater use of Hindi.

Prof. Narsi Ram Bishnoi, in his address, stated that Guru Jambheshwar Ji Maharaj's principles serve as a bridge between human consciousness and natural balance. Following Guru Ji's principles, GJUS&T is establishing its global identity by pursuing academic excellence and fulfilling social responsibilities. Citing the recent NIRF and other global rankings received by the University, he explained that for GJUS&T, education is not merely a means of employment, but a means of nation-building. He emphasized that meaningful education is one that combines both innovation and ethics. Recalling the glorious 30-year journey of GJUS&T, he remembered the heroes of this journey and said that GJUS&T is fully prepared to make a leading contribution to the journey towards a developed India by 2047.

Prof. K.C. Bansal said that university teachers can play a key role in nation-building. Teachers must adopt the mantra of 'reform', 'perform', and 'transform' and reform their techniques, perform with passion, and transform their students. He called upon teachers to work for health, the environment, and other national issues using the latest tools of current technology. He said that GJUS&T is proving to be an important institution not only for Haryana and India, but for the entire world.

Dr. Vijay Kumar stated that the transmission of Guru Jambheshwar Ji Maharaj's teachings and energy is GJUS&T's strength. The university's value-based and employment-oriented courses have created a new identity. The university has established new dimensions in world rankings. When India develops in 2047,

GJUS&T will be representing India globally, like ancient universities like Nalanda and Takshashila. Prof. Yogesh Chaba delivered the welcome address and outlined the programme.

A souvenir commemorating the 30-year journey of GJUS&T, Hisar was released at the event. A book exhibition, courtesy of the Dr. Bhim Rao Ambedkar Library, showcased books from world-class publishers across all disciplines. An exhibition showcasing the achievements and outstanding research papers from various departments of the university was also organized. The chief guest planted a tree on the university campus. He visited the Guru Jambheshwar Ji Maharaj Institute of Religious Studies, PDUIIC and PDUCIC. The vote of thanks was presented by Prof. Kashmiri Lal, Director IQAC. Dr. Ramesh Kumar and Dr. Vikramjeet, Deputy Directors were also present.

On this occasion, 51 teachers and research scholars, including Prof. Narsi Ram Bishnoi, Vice-Chancellor of University were honored for their outstanding contributions to education. These included Prof. Narsi Ram Bishnoi, Vice-Chancellor, Prof. K.C. Bansal, Prof. Neeraj Dilbaghi, Dr. Khushboo, Prof. Dinesh Dhingra, Prof. Jai Devi, Tanisha Arora, Binesh Kumar, Prof. Mahesh Kumar, Amit Malik, Prof. Ashwani Kumar, Prof. Kashmiri Lal, Dr. Jyoti, Aman Kumar, Dr. Navnidhi Chhikara, Prof. Sunita Pannu, Dr. Anu Gupta, Dr. Ramesh Kumar, Prof. Munish Ahuja, Prof. R.S. Kundu, Dr. Pushpa Rani, Prof. Kapil Kalkal, Prof. Shabnam Joshi, Prof. Satbir Mor, Prof. Ashish Aggarwal, Shalu Kaushik, Prof. Sujata Sanghi, Prof. Vikas Verma, Prof. Himani Sharma, Divya Jain, Prof. Devendra Mohan, Dr. Hardev Singh, Dr. Rajesh Kumar, Prof. Sonika, Pinki, Naresh Kumar, Dr. Jyoti, Pooja Devi, Pooja Rani, Dr. Tejpal Singh Chundawat, Dr. Sapna Grewal, Prof. Asha Gupta, Subhash Chandra, Sangeeta Yadav, Dr. Santosh Kumari, Meenakshi Mehra, Dr. Sandeep Singh Sheoran, Shilpa Chaudhary, Prof. Meenakshi Bhatia, Pooja Rani and Sonam Rani.

Prof. T.G. Sitharam, Chief Guest inaugurating the ceremony at GJUS&T, Hisar.

Prof. T.G. Sitharam, Chief Guest, Prof. Narsi Ram Bishnoi, Vice-Chancellor and other guests releasing a Souvenir at the programme at GJUS&T, Hisar.

Prof. Narsi Ram Bishnoi, Vice-Chancellor was honored for his excellent academic achievements at GJUS&T, Hisar.

Prof. T.G. Sitharam, Chief Guest, Prof. Narsi Ram Bishnoi, Vice-Chancellor and other guests observing books exhibition at GJUS&T, Hisar.

Prof. T.G. Sitharam, Chief Guest, planting a sapling at GJUS&T Hisar campus.

Media Coverage

विकसित भारत-2047 संकल्प में गुजवि की रहेगी अग्रणी भूमिका : प्रो. सीथाराम

हरिभूमि न्यूज

हिसार। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीटीई) के चेयरमैन प्रो. टी.जी. सीथाराम ने कहा है कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूरा करने की यात्रा में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार (गुजविप्रौवि) की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। महान संत एवं पर्यावरणविद् गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय शोध व नवाचार के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना में भी योगदान दे रहा है। प्रो. टी.जी. सीथाराम मंगलवार को गुजविप्रौवि के 31वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। एनबीईजीओआर-आईसीएआर, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. के.सी. बंसल व एआईसीटीई के निदेशक कमलजीत सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई, कुलसचिव डा. विजय कुमार, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. योगेश चाबा व आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. कश्मीरी लाल भी समारोह में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रो. टीजी सीथाराम ने अपने संबोधन में कहा कि कृत्रिम बौद्धिकता ने वर्तमान परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। कृत्रिम बौद्धिकता के जहां हमारे लिए बहुत फायदे हैं, वहीं इससे बहुत सारी चुनौतियां भी आ गई हैं। ऐसे में शिक्षकों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। हमारे लिए आवश्यक है कि हम खुद को वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार और अधिक कौशलयुक्त करें तथा राष्ट्र व समाज के निर्माण में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा है कि भारत तेजी से विकसित हो रहा है। शोध व तकनीक के क्षेत्र में आज हम आयातक से निर्यातक की भूमिका में आ गए हैं।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु : प्रो. नरसी राम बिश्नोई

प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने संबोधन में कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। गुरु जी के सिद्धांतों को ही अपनाते हुए गुजविप्रौवि शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली एनआईआरएफ तथा अन्य वैश्विक रैंकिंग का हवाला देते हुए बताया कि गुजविप्रौवि के लिए शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का साधन है। उन्होंने कहा कि सार्थक शिक्षा वह है जो नवाचार और नैतिकता दोनों को जोड़ती है। उन्होंने गुजवि की 30 साल की गौरवमयी यात्रा का जिक्र करते हुए इस यात्रा के नायकों को याद किया तथा कहा कि 2047 तक विकसित भारत की यात्रा में अपना अग्रणी योगदान देने के लिए विश्वविद्यालय पूरी तरह तैयार है।

शिक्षक अपनाएं 'रिफॉर्म', 'परफॉर्म' व 'ट्रांसफॉर्म' का मंत्र : प्रो. के.सी. बंसल

प्रो. के.सी. बंसल ने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षक राष्ट्र निर्माण में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षकों को 'रिफॉर्म', 'परफॉर्म' व 'ट्रांसफॉर्म' के मंत्र को अपनाते हुए अपनी तकनीकों में रिफॉर्म करना है, पैशन के साथ परफॉर्म करना है तथा विद्यार्थियों को ट्रांसफॉर्म करना है। उन्होंने शिक्षकों से वर्तमान तकनीक के आधुनिकतम टूल्स का प्रयोग करते हुए स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा अन्य राष्ट्रीय मुद्दों के लिए कार्य करने का आह्वान किया।

विकसित भारतञ्च2047 संकल्प में गुजविप्रौवि की रहेगी अग्रणी भूमिका : प्रो. टी.जी. सीथाराम

उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल करने वाले शिक्षकों व शोधार्थियों को किया सम्मानित

विजन टाइम्स न्यूज

हिसार । अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीटीई) के चेयरमैन प्रो. टी.जी. सीथाराम ने कहा है कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूरा करने की यात्रा में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार (गुजविप्रौवि) की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। महान संत एवं पर्यावरणविद् गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय शोध व नवाचार के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना में भी योगदान दे रहा है। प्रो. टी.जी. सीथाराम मंगलवार को गुजविप्रौवि के 31वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। एनबीपीजीआर-आईसीएआर, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. के.सी बंसल व एआईसीटीई के निदेशक कमलजीत सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई, कुलसचिव डा. विजय कुमार, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. योगेश चाबा व आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. कश्मीरी लाल भी समारोह में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रो. टीजी सीथाराम ने अपने संबोधन में कहा कि कृत्रिम बौद्धिकता ने वर्तमान परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। कृत्रिम बौद्धिकता के जहां हमारे लिए बहुत फायदे हैं, वहीं इससे बहुत सारी चुनौतियां भी आ गई हैं। ऐसे में शिक्षकों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। हमारे लिए आवश्यक है कि हम खुद को वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार और अधिक कौशलयुक्त करें तथा राष्ट्र व समाज के निर्माण में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा है कि भारत तेजी से विकसित हो रहा है। शोध व तकनीक के क्षेत्र में आज हम आयातक से निर्यातक की भूमिका में आ गए हैं। राष्ट्रीय नीति-2020 को उन्होंने क्रांतिकारी कदम बताया तथा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का आह्वान किया।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु : प्रो. नरसी राम बिश्नोई

प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने संबोधन में कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। गुरु जी के सिद्धांतों को ही अपनाते हुए गुजविप्रौवि शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली एनआईआरएफ तथा अन्य वैश्विक रैंकिंग का हवाला देते हुए बताया कि गुजविप्रौवि के लिए शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का साधन है। उन्होंने कहा कि सार्थक शिक्षा वह है जो नवाचार और नैतिकता दोनों को जोड़ती है। उन्होंने गुजविप्रौवि की 30 साल की गौरवमयी यात्रा का जिक्र करते हुए इस यात्रा के नायकों को याद किया तथा कहा कि 2047 तक विकसित भारत की यात्रा में अपना अग्रणी योगदान देने के लिए गुजविप्रौवि पूरी तरह तैयार है।

शिक्षक अपनाएं रिफॉर्म, परफॉर्म व ट्रांसफॉर्म का मंत्र : प्रो. के.सी. बंसल

प्रो. के.सी. बंसल ने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षक राष्ट्र निर्माण में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षकों को रिफॉर्म, परफॉर्म व ट्रांसफॉर्म के मंत्र को अपनाते हुए अपनी तकनीकों में रिफॉर्म करना है, पैशन के साथ परफॉर्म करना है तथा विद्यार्थियों को ट्रांसफॉर्म करना है। उन्होंने शिक्षकों से वर्तमान तकनीक के आधुनिकतम टूल्स का प्रयोग करते हुए स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा अन्य राष्ट्रीय मुद्दों के लिए कार्य करने का आह्वान किया।

गुजविप्रौवि करेगा विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व : डा. विजय कुमार

डा. विजय कुमार ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी महाराज की शिक्षाओं और ऊर्जा का संचरण गुजविप्रौवि की ताकत है। विश्वविद्यालय के मूल्य आधारित तथा रोजगारपरक कोर्सों ने नई पहचान बनाई है। विश्व रैंकिंग में विश्वविद्यालय ने नए आयाम स्थापित किए हैं। 2047 में जब भारत विकसित होगा तब गुजविप्रौवि नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों की तरह विश्व में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा होगा। प्रो. योगेश चाबा ने स्वागत संबोधन किया तथा कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का आयोजन इंटरनल क्वालिटि एश्योरेंस सेल के सौजन्य से किया गया। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से संबंधित उपलब्धियों व शोध पत्रों से संबंधित प्रदर्शनी भी लगाई गई। मुख्यातिथि ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधारोपण किया। उन्होंने गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान, पीटीयूआईआईसी व पीडीयूसीआईसी का दौरा किया। धन्यवाद संबोधन आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. कश्मीरी लाल ने किया। इस अवसर पर आईक्यूएसी के उपनिदेशक डा. रमेश कुमार व उपनिदेशक डा. विक्रमजीत भी उपस्थित रहे। शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए इन शिक्षकों व शोधार्थियों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए गुजविप्रौवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई सहित 51 शिक्षकों व शोधार्थियों को सम्मानित किया गया।

इनमें कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई, प्रो. के.सी. बंसल, प्रो. नीरज दिलबागी, डा. खुशबू, प्रो. दिनेश धींगड़ा, प्रो. जय देवी, तनीषा अरोड़ा, विनेश कुमार, प्रो. महेश कुमार, अमित मलिक, प्रो. अश्वनी कुमार, प्रो. कश्मीरी लाल, डा. ज्योति, अमन कुमार, डा. नवनिधि शिकारा, प्रो. सुनीता पाहू, डा. अनु गुप्ता, डा. रमेश कुमार, प्रो. सुनील अहूजा, प्रो. आर.एस. कुंडू, डा. पुष्पा रानी, प्रो. कपिल कालकल, प्रो. शबनम जोशी, प्रो. सतबीर मोर, प्रो. आशीष अग्रवाल, शालू कौशिक, प्रो. सुजाता सांघी, प्रो. विकास वर्मा, प्रो. हिमानी शर्मा, दिव्या जैन, प्रो. देवेन्द्र मोहन, डा. हरदेव सिंह, डा. राजेश कुमार, प्रो. मोनिका, पिंकी, नरेश कुमार, डा. ज्योति, पूजा देवी, पूजा रानी, डा. तेजपाल सिंह पुंडावत, डा. सपना ग्रेवाल, प्रो. आशा गुप्ता, सुभाष चंद, संगीता यादव, डा. संतोष कुमारी, मीनाक्षी मेहरा, डा. संदीप सिंह रुहेलान, शिल्पा चौधरी, प्रो. मीनाक्षी भाटिया, पूजा रानी व सोनम रानी को सम्मानित किया गया।

उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल करने वाले शिक्षकों-शोधार्थियों को किया सम्मानित

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विवि ने मनाया स्थापना दिवस

'विकसित भारत' में गुजवि की रहेगी अग्रणी भूमिका : सीथाराम

हरिभूमि न्यूज ›› हिसार

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के चेयरमैन प्रो. टी.जी. सीथाराम ने कहा है कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूरा करने की यात्रा में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। महान संत एवं पर्यावरणविद् गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय शोध व नवाचार के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना में भी योगदान दे रहा है। प्रो. टी.जी. सीथाराम मंगलवार को गुजवि के 31वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। एनबीपीजीआर-आईसीएआर, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. के.सी. बंसल व एआईसीटीई के निदेशक कमलजीत सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डॉ. वंदना बिश्नोई, कुलसचिव डॉ. विजय कुमार, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. योगेश चाबा व आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. कश्मीरी लाल भी समारोह में विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस सेल के सौजन्य से किया गया। प्रो. टीजी सीथाराम ने अपने संबोधन में कहा कि कृत्रिम बौद्धिकता ने वर्तमान परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। कृत्रिम बौद्धिकता के जहां हमारे लिए बहुत फायदे हैं, वहीं इससे बहुत सारी चुनौतियां भी आ गई हैं। ऐसे में शिक्षकों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। हमारे लिए आवश्यक है कि हम खुद को वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार और अधिक कौशलयुक्त करें।

हिसार। मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते मुख्यातिथि प्रो. टी.जी. सीथाराम।

गुरु जम्भेश्वर के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु : प्रो. बिश्नोई

प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने संबोधन में कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। गुरु जी के सिद्धांतों को ही अपनाते हुए गुजवि शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने हाल ही में विश्वविद्यालय को मिली एनआईआरएफ तथा अन्य वैश्विक रैंकिंग का हवाला देते हुए बताया कि गुजविप्रौवि के लिए शिक्षा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का साधन है। प्रो. के.सी. बंसल ने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षक राष्ट्र निर्माण में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षकों को 'रिफॉर्म', 'परफॉर्म' व 'ट्रांसफॉर्म' के मंत्र को अपनाते हुए अपनी तकनीकों में रिफॉर्म करना है, पेशा के साथ परफॉर्म करना है तथा विद्यार्थियों को ट्रांसफॉर्म करना है।

इन शिक्षकों-शोधार्थियों को किया सम्मानित

इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए गुजवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई सहित 51 शिक्षकों व शोधार्थियों को सम्मानित किया गया। इनमें कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई, प्रो. के.सी. बंसल, प्रो. नीरज दिलबागी, डा. खुशबू, प्रो. दिनेश ढींगड़ा, प्रो. जय देवी, तनीषा अरोड़ा, विनेश कुमार, प्रो. महेश कुमार, अमित मलिक, प्रो. अश्वनी कुमार, प्रो. कश्मीरी लाल, डॉ. ज्योति, अमन कुमार, डॉ. नवनिधि छिकारा, प्रो. सुनीता पान्नू, डॉ. अनु गुप्ता, डॉ. रमेश कुमार, प्रो. सुशील अहूजा, प्रो. आर.एस. कुंडू, डॉ. पुष्पा रानी, प्रो. सचिन कालवाल, प्रो. अक्षयम ओली, प्रो. सतबीर मोर, प्रो. आलोक अग्रवाल, भानु कौशिक, प्रो. सुजाता सांघी, प्रो. विकास वर्मा, प्रो. हिमानी शर्मा, प्रिया जैन, प्रो. देवेन्द्र मोहन, डॉ. हरदेव सिंह, डॉ. राजेश कुमार, प्रो. सौमित्र, रिंकी, अरेश कुमार, डॉ. ज्योति, पूजा देवी, पूजा रानी, डॉ. तेजपाल सिंह दुग्गल, डॉ. अजय चौहान, प्रो. अमन गुप्ता, सुभाष चंद्र, संगीता यादव, डॉ. संतोष कुमारी, मीनाक्षी मेहता, डॉ. संदीप सिंह, ज्योतिर, शिल्पा चौधरी, प्रो. मीनाक्षी भटिया, पूजा रानी व ओमन रानी को सम्मानित किया गया।

भारत-2047 संकल्प में गुजविप्रौवि की रहेगी अग्रणी भूमिका : प्रो. टीजी सीथाराम

जागरण संवाददाता • हिसार : अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के चेयरमैन प्रो. टीजी सीथाराम ने कहा है कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को पूरा करने की यात्रा में गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। महान संत एवं पर्यावरणविद् गुरु जंभेश्वर महाराज के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय शोध व नवाचार के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना में भी योगदान दे रहा है। प्रो. टीजी सीथाराम मंगलवार को गुजविप्रौवि के 31वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। अध्यक्षता कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। नई दिल्ली के एनबीपीजीआर-आइसीएआर के पूर्व निदेशक प्रो. केसी बंसल व एआइसीटीई के निदेशक कमलजीत सिंह बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। विवि की प्रथम महिला डा. वंदना बिश्नोई, कुलसचिव डा. विजय कुमार, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. योगेश चाबा व आइक्यूएसी के निदेशक प्रो. कश्मीरी लाल भी उपस्थित रहे। प्रो. टीजी सीथाराम ने कहा की कृत्रिम बौद्धिकता ने वर्तमान परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि गुरु जंभेश्वर महाराज के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। उनके सिद्धांतों को जीवन में अपनाएं।

गुजवि में पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते मुख्य अतिथि प्रो. टीजी सीथाराम।

वीसी सहित 51 शिक्षकों व शोधार्थियों को किया सम्मानित

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई सहित 51 शिक्षकों व शोधार्थियों को सम्मानित किया गया। इनमें कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई, प्रो. केसी बंसल, प्रो. नीरज दिलबागी, डा. खुशबू, प्रो. दिनेश ढींगड़ा, प्रो. जय देवी, तनीषा अरोड़ा, विनेश कुमार, प्रो. महेश कुमार, अमित मलिक, प्रो. अश्वनी कुमार, प्रो. कश्मीरी लाल, डा. ज्योति, अमन कुमार, डा. नवनिधि छिकारा, प्रो. सुनीता पान्नू, डा. अनु गुप्ता सहित अन्य को सम्मानित किया गया।

स्थापना दिवस पर शिक्षकों-शोधार्थियों का सम्मान, पुस्तक मेला देखने उमड़े विद्यार्थी

एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. टीजी सीथाराम बोले- विकसित भारत संकल्प में जीजेयू की अग्रणी भूमिका

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के चेयरमैन प्रो. टीजी सीथाराम ने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प में गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय (जीजेयू) की अग्रणी भूमिका रहेगी।

महान संत और पर्यावरणविद् गुरु जम्भेश्वर महाराज के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय न केवल शोध और नवाचार में अग्रसर है, बल्कि नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति भी सजग है।

वे मंगलवार को जीजेयू के 31वें स्थापना दिवस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। समारोह में शिक्षा और शोध के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले 51 शिक्षकों व शोधार्थियों को सम्मानित किया गया।

प्रो. टीजी सीथाराम ने कहा कि कृत्रिम बौद्धिकता (एआई) ने आज की जरूरत है। इसने आधुनिक युग का स्वरूप पूरी तरह बदल दिया है। इसके अनेक फायदे हैं, लेकिन चुनौतियां भी उतनी ही बड़ी हैं। ऐसे में शिक्षकों को अपने कौशल को अपडेट कर राष्ट्र और समाज निर्माण में योगदान देना चाहिए।

स्मारिका विमोचन और पौधरोपण भी किया गया : समारोह के दौरान जीजेयू की 30 साल की गौरवमयी यात्रा पर आधारित स्मारिका का विमोचन किया गया। डॉ. भीमराव आंबेडकर पुस्तकालय की ओर से पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई। पुस्तकें खरीदने के लिए विद्यार्थियों की भीड़ उमड़ी। मुख्य अतिथि ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

जीजेयू में पुस्तक मेले का अवलोकन करते प्रो. टीजी सीथाराम, वीसी प्रो. नरसीराम। संवाद

गुरु जम्भेश्वर महाराज के सिद्धांत प्रकृति के सेतु

समारोह की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर महाराज के सिद्धांत मानव चेतना और प्रकृति के संतुलन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालय इन्हीं सिद्धांतों को अपनाकर शैक्षणिक उत्कृष्टता और सामाजिक उत्तरदायित्व दोनों में अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने विवि की 30 वर्ष की गौरवमयी यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि जीजेयू विकसित भारत के संकल्प में अपना नेतृत्वकारी योगदान देने को तैयार है।

विश्व स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करेगा जीजेयू

डॉ. विजय कुमार ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर महाराज की शिक्षाएं और ऊर्जा जीजेयू की असली ताकत है। मूल्य आधारित और रोजगारपरक कोर्सों के माध्यम से विश्वविद्यालय ने देश-विदेश में नई पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि जीजेयू आने वाले वर्षों में विश्व मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करेगा।

जीजेयू में आयोजित पुस्तक मेले में पुस्तकें पसंद करते विद्यार्थी। संवाद

रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म अपनाएं शिक्षक : प्रो. बंसल

प्रो. केसी बंसल ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र निर्माण में सबसे बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने शिक्षकों से रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के क्षेत्र को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को नई तकनीक का उपयोग कर स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों पर काम करना चाहिए।

• जीजेयू के 31वें स्थापना दिवस पर कार्यक्रम, पुस्तक प्रदर्शनी लगाई, शिक्षकों को किया सम्मानित

एआई ने वर्तमान परिदृश्य को बदला, शिक्षकों की भूमिका अधिक बढ़ी : प्रो. टीजी. सीताराम

भास्कर न्यूज | हिसार

कृत्रिम बौद्धिकता (एआई) ने वर्तमान परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है। कृत्रिम बौद्धिकता के जहां हमारे लिए बहुत फायदे हैं, वहीं इससे बहुत सारी चुनौतियां भी आ गई हैं। ऐसे में शिक्षकों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। यह बात अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् एआईसीटीई के चेयरमैन प्रो. टीजी. सीताराम ने जीजेयू के 31वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। एनबीजीआर-आईसीएआर, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. केसी बंसल व एआईसीटीई के निदेशक कमलजीत सिंह विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की प्रथम महिला डॉ. वंदना बिश्नोई, कुलसचिव डॉ. विजय कुमार, डीन एकेडमिक अफेयर्स प्रो. योगेश चाबा व आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. कश्मीरी लाल भी समारोह में विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि गुरु जम्भेश्वर महाराज के सिद्धांत मानव चेतना व प्रकृति संतुलन के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। जीजेयू की 30 साल की यात्रा से संबंधित स्मारिका का विमोचन किया गया। डा. भीम राव आम्बेडकर पुस्तकालय के सौजन्य से पुस्तक प्रदर्शनी की ओर से लगाई गई।

गुजविप्रौवि हिसार में श्रेष्ठ शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई को किया गया सम्मानित।

30 साल पहले एक टीचिंग ब्लॉक से शुरू हुई थी विश्वविद्यालय की शुरुआत

जीजेयू की स्थापना अब से 30 साल पहले 20 अक्टूबर 1995 को हुई थी। उस समय यूनिवर्सिटी में सिर्फ एक टीचिंग ब्लॉक था, तब यूनिवर्सिटी का अपना प्रशासनिक भवन भी नहीं था। शिक्षकों के रहने के लिए सिर्फ 5 डी टाइप आवास थे। अब यूनिवर्सिटी में 10 टीचिंग ब्लॉक हैं, जिनमें 25 से ज्यादा शैक्षणिक विभाग हैं, इनमें 70 से ज्यादा नियमित कोर्स चल रहे हैं। यूनिवर्सिटी के पास साल 2001 से नैक ग्रेड है। यूनिवर्सिटी अब 372 एकड़ एरिया में फैली है। कैंपस में सात हजार से ज्यादा नियमित विद्यार्थी हैं, संबद्ध कॉलेजों में 35000 विद्यार्थी हैं। लाइब्रेरी में 1.26 लाख बुक्स हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए ये शिक्षक व शोधार्थी किए गए सम्मानित

इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई सहित 51 शिक्षकों व शोधार्थियों को सम्मानित किया गया। इनमें कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई, प्रो. केसी. बंसल, प्रो. नीरज दिलबागी, डॉ. खुशबू, प्रो. दिनेश ढींगड़ा, प्रो. जय देवी, तनीषा अरोड़ा, बिनेश कुमार, प्रो. महेश कुमार, अमित मलिक, प्रो. अश्वनी कुमार, प्रो. कश्मीरी लाल, डॉ. ज्योति, अमन कुमार, डॉ. नवनिधि डिकारा, प्रो. सुनीता पाहू, डॉ. अनु गुप्ता, डॉ. रमेश कुमार, प्रो. मुनीश अहूजा, प्रो. आर.एस. कुंडू, डॉ. पुष्प रानी, प्रो. कपिल कलकल, प्रो. शबनम जोशी, प्रो. सतबीर मोर, प्रो. आशीष अग्रवाल, शालू कौशिक, प्रो. सुजाता सांघी, प्रो. विकास वर्मा, प्रो. हिमानी शर्मा, दिव्या जैन आदि को सम्मानित किया।